अनन्त सत्य के प्रकाश में सभोपदेशक 6:3 को समझना

मुख्य पाठ: सभोपदेशक 6:3 (NIV)
“यदि कोई मनुष्य सौ बच्चे उत्पन्न करे और बहुत वर्ष जीवित
रहे… परन्तु यदि वह अपने धन का सुख नहीं भोगता और उसे उचित दफ़न भी नहीं मिलता, तो मैं कहता हूँ कि उससे गर्भपात हुआ
बच्चा ही अच्छा है।”

पद की समझ: संतुष्टि के बिना जीवन की त्रासदी

सभोपदेशक के लेखक, जिन्हें परम्परागत रूप से राजा सुलैमान माना जाता है, यह दिखा रहे हैं कि बाहरी सफलता से भरा जीवन भी व्यर्थ है यदि उसमें आंतरिक संतुष्टि और अनन्त उद्देश्य न हो। वे एक ऐसे व्यक्ति की कल्पना करते हैं जिसके पास—

बड़ा परिवार (जो प्राचीन हिब्रू संस्कृति में आशीर्वाद और सम्मान का प्रतीक था),
लंबी आयु (जो परमेश्वर की कृपा माना जाता था),
परन्तु अपने परिश्रम का आनंद लेने की क्षमता नहीं और उचित दफ़न भी नहीं (जो इस्राएल में बड़ी अपमानजनक बात थी)।

सुलैमान के समय में उचित दफ़न केवल अंतिम संस्कार नहीं था—यह

गरिमा, सम्मान और समुदाय की स्वीकृति का प्रतीक था। इसके बिना मरना, एक अर्थहीन और अपमानजनक जीवन का संकेत था।

इसीलिए सुलैमान का चौंकाने वाला निष्कर्ष है कि गर्भपात हुआ बच्चा—जिसने कभी प्रकाश नहीं देखा—ऐसे मनुष्य से बेहतर है। क्यों?

क्योंकि वह बच्चा—

जीवन की निराशाओं और व्यर्थता को नहीं झेलता,
इस पापग्रस्त संसार की कठोर वास्तविकताओं से बचा रहता है (सभोपदेशक 1:2–3; रोमियों 8:20)।

यह तुलना मनुष्य के जीवन का मूल्य घटाने के लिए नहीं है, बल्कि यह दिखाने के लिए है कि परमेश्वर के बिना लंबा और समृद्ध जीवन भी कितना दुखद हो सकता है।

बाइबिल के उदाहरण: आहाब और इज़ेबेल

राजा आहाब (1 राजाओं 16–22) के पास धन, शक्ति, बहुत से बच्चे (सत्तर पुत्र, 2 राजा 10:1), और राजसिंहासन था। परन्तु उसकी मृत्यु अपमानित होकर हुई—कुत्तों ने उसका खून चाटा, जैसा पूर्व में भविष्यद्वाणी किया गया था (1 राजा 21:19; 22:38)।

इसी प्रकार उसकी पत्नी इज़ेबेल को खिड़की से नीचे फेंका गया, घोड़ों ने रौंदा और कुत्तों ने खा लिया (2 राजा 9:33–36)। उन्हें उचित दफ़न तक नहीं मिला।
उनके जीवन इस बात के प्रमाण हैं कि धर्मरहित जीवन व्यर्थ अंत को प्राप्त होता है।

गहरी आध्यात्मिक सच्चाई: परमेश्वर के सामने वास्तविक दफ़न

सच्चा दफ़न शारीरिक दफ़न नहीं, बल्कि पाप के लिए मरना और मसीह में जीवित होना है।

रोमियों 6:3–4 (NIV):
“क्या तुम नहीं जानते कि हम सब… मसीह यीशु की मृत्यु में बपतिस्मा लेकर उसके साथ गाड़े गए… ताकि जैसे मसीह मृतकों में से जिलाया गया, वैसे हम भी नए जीवन में चलें।”

अर्थात, जो लोग पुराने जीवन के लिए मर चुके और मसीह में जी उठे—वही जीवन और मृत्यु दोनों में अर्थ पाते हैं।

यीशु ने कहा (लूका 12:15):

“मनुष्य का जीवन उसकी संपत्ति की बहुतायत पर निर्भर नहीं करता।”

आप चाहे संसार भर का लाभ उठा लें, पर यदि आत्मा न बचे, तो कुछ भी लाभ नहीं (मत्ती 16:26)।

गर्भपात हुआ बच्चा बनाम अधर्मी मनुष्य: अनन्त अंतर

गर्भपात हुआ बच्चा न्याय से बच जाता है—बाइबल कभी गर्भस्थ शिशु को दोषी नहीं ठहराती (व्यवस्थाविवरण 1:39)।
परन्तु जो व्यक्ति बिना परमेश्वर जिए और बिना मसीह मरे—वह परमेश्वर से अनन्त पृथक्करण का सामना करता है।

इब्रानियों 9:27:
“मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का सामना करना ठहराया गया है…”

इसलिए यदि कोई व्यक्ति धन, परिवार और सम्मान तो प्राप्त करे, परन्तु मसीह को खो दे—तो उसका सब कुछ व्यर्थ है।

उद्धार की तत्परता

2 कुरिन्थियों 6:2:
“देखो, अब उद्धार का दिन है!”

मसीह क्षमा के साथ-साथ अर्थपूर्ण जीवन और अनन्त महिमा देता है। उसके बिना सफल जीवन भी आत्मिक मृत्यु पर समाप्त होता है।

भजन 116:15:
“यहोवा की दृष्टि में उसके भक्तों की मृत्यु मूल्यवान है।”

परमेश्वर विश्वासियों की मृत्यु का सम्मान करता है—क्योंकि उनका अंत अनन्त जीवन की शुरुआत है।

अंतिम आह्वान: आज मसीह को चुनें

यदि आज आपकी मृत्यु हो जाए—आप अनन्त काल कहाँ बिताएँगे? गर्भपात हुआ बच्चा पृथ्वी पर भुला दिया जाता है, परन्तु अधर्मी

बिना मसीह के अनन्तकाल में भुला दिया जाता है।

आज अवसर है—यीशु पर विश्वास करें।
उसे अपने पाप धोने दें और अनन्त जीवन दें।

यूहन्ना 3:16:
“क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया…”

प्रार्थना और आशीष

अपने हृदय को खोलें और यीशु मसीह को प्रभु के रूप में ग्रहण करें।
उन्हें आपके जीवन—और आपकी मृत्यु—दोनों को अर्थपूर्ण बनाने दें।

परमेश्वर आपको आशीष दे, और आपका अंत उसके सामने सम्मानपूर्ण हो।
यदि यह संदेश आपके हृदय को छू गया हो, तो इसे दूसरों के साथ साझा करें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP....

Share on:
WhatsApp